विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:01-03-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: अष्टम: पाठनाम विचित्र साक्षी

पाठ्यांश:

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनाया: विषये वक्तुमादिष्टौ । आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत् स शव: प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान् -मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं चोरिताया: मञ्जूषाया: ग्रहनाद् वारितः, अत: निजकृत्यस्य फल भुङ्क्ष्व।अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति।

शब्दार्था: -

घटनाया:- घटना के , वक्तुम् – बोलने के लिए , आदिष्टौ -आदेश दिया , अपसार्य – हटाकर, प्रस्तुतवति – प्रस्तुत करने पर , अभिवाद्य – प्रणाम करके , अध्वनि - रास्ते में , भुङ्क्ष्व- भोगो , चोरिताया: - चुराई गई , ग्रहणात् - लेने से ,वारित: -रोका गया , निजकृत्यस्य -अपने किए का , वर्षत्रयस्य – तीन वर्ष की , लप्स्यसे – पाओगे , मुक्तवान् – छोड़ दिया

अर्थ

न्यायाधीश ने फिर उनदोनों को घटना के विषय में बोलने का आदेश दिया। सिपाही के द्वारा अपना पक्ष रखने पर आश्चर्यजनक घटना घटी , वह मुर्दा (शरीर) कंबल को हटाकर न्यायाधीश को प्रणाम करके बोला -महोदय इस सिपाही ने रास्ते में जो कहा कहा था, उसको कह रहा हूं 'तुम्हारे द्वारा मुझे चोरी की गई मंजूषा को लेने से रोका गया था , इसलिए अपने किए गए कर्म का फल भोगो ।इस चोरी के अभियोग में तुम तीन वर्ष की जेल का दंड पाओगे।